B.A PART-I
हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय पत्र
मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य शेषभाग-3

प्रश्न - रीतिकालीन काव्य की सामान्य प्रवृत्तियाँ ।

उत्तर - ⑧ प्रकृति चित्रण :- रीतिकवियों ने प्रकृति चित्रण प्राय: उद्दीपन एवं आलंकारिक रूप में किया है । प्रकृति का आलम्बन रूप में चित्रण बहुत कम हुआ है । नायक-नायिका की मानसिक दशा के अनुकूल प्रकृति भी संयोग काल में सुखद एवं वियोग काल में दुखद रूप में चित्रित की गयी है । परम्परागत रूप में षड्ऋतु वर्णन एवं बारहमासे का चित्रण भी इन कवियों ने किया है, परन्तु उसमें कोई नवीनता नहीं है । रीतिकालीन विलासी वातावरण में रमे हुए इन कवियों को इतना अवकाश हीं कहाँ था कि वे प्रकृति के मनोहर स्वरूप पर रीझकर काव्य रचना करते? सेनापति जैसे एक-दो कवियों ने हीं प्रकृति के मनोरम चित्र अंकित किये हैं अन्यथा बिहारी, देव, मतिराम, भिखारी दास आदि कवियों के षड्ऋतु वर्णन में उद्दीपन रूप में हीं प्रकृति-चित्रण उपलब्ध होता है । सेनापति को ऋतु वर्णन में अप्रतिम सफलता प्राप्त हुई है । उन्होंने सभी ऋतुओं का सुंदर वर्णन किया है । वर्षाकाल का एक चित्र द्रष्टव्य है —

"सेनापति उनए नए जलद सावन के,
चारिहु दिसान घुमरत भरे तोय के।
सोभा सरसाने न बखाने जात केहूँ भाँति,
आने हैं पहार मानो काजर के दोय के"॥

रीतिकाल के एक अन्य कवि पद्माकर का बसंत वर्णन भी अत्यंत आकर्षण बन पड़ा है —

P.T.O

"द्वार में दिसान में दुनी में देस-देसन में
देखी दीप दीपन में दीपक दिगंत हैं।
बीथिन में कुंज में नवेलिन में वेलिन में,
बनन में, बागन में बगरयौ बसंत हैं॥"

रीतिकालीन कवियों ने प्रकृति का निरूपण अप्रस्तुत विधान के रूप में भी किया। उन्होंने प्रकृति से विभिन्न उपमान लेकर नायिका के अंग-सौन्दर्य का वर्णन किया है। कमल, चंद्रमा, हंस, कोकिल, चातक, मेघ, पर्वत, पुष्प आदि इसी प्रकार के उपमान हैं।

रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि बिहारी के काव्य में भी प्रायः सभी ऋतुओं का वर्णन उपलब्ध होता है। निम्न दोहे में वासंती मकरंद से तृप्त भौंरों का अत्यंत मनोरम चित्र अंकित किया गया है—

छकि रसाल सौरभ सने मधुर माधवी गंध।
ठौर-ठौर झौंरत झपत भौंर-झौंर मधु अंध॥

रीतिकाल में यद्यपि प्रकृति-चित्रण का अभाव नहीं है तथापि प्रकृति के प्रति इनका दृष्टिकोण तटस्थ था। छायावादी कवियों ने जिस प्रकार प्रकृति को आलम्बन बनाकर मनोहर काव्य की रचना की, वैसा रीतिकाल के कवि नहीं कर पाये।

(9) <u>संकुचित जीवन दृष्टि</u> :- रीतिकालीन कवियों की जीवन-दृष्टि अत्यंत संकुचित दिखाई पड़ती है। किसी महान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वे काव्य-रचना में प्रवृत्त नहीं हुए, अपितु श्रृंगार-प्रधान

काव्य लिखकर उन्होंने आश्रय दाताओं विलासी राजाओं का मनोरंजन मात्र किया। अधिकांश कवि नायिका के कटाक्ष कुशल नेत्रों, उन्नत उरोजों, रक्तम कपोलों, रसमक्त अधरों, पुष्ट जंघाओं और द्युतिमान अंगों के सौंदर्य का निरूपण करने में ही कवि कर्म की सार्थकता समझते रहे। जीवन के प्रति जिस व्यापक दृष्टिकोण की अपेक्षा उत्तम काव्य-रचना के लिए की जाती है, उसका नितांत अभाव रीतिकालीन काव्य में है। इन कवियों ने जीवन के विविध पक्षों की ओर से अपनी दृष्टि हटाकर शृंगार के सीमित वृत्त में ही केन्द्रित कर ली। डॉ० भागीरथ मिश्र ने रीतिकालीन कवियों की इस प्रवृत्ति पर विचार करते हुए कहा है — "ऐसा लगता है कि रीति-कविता के रचयिता यौवन और बसंत के कवि हैं। जीवन का फूलता हुआ सुधार रूप ही उन्हें प्रिय है। ---- उसने जीवन का एक ही स्वरूप लिया, एक ही पक्ष लिया, यह इस द्वारा के कवि की संकीर्णता है, दुर्बलता है और एकांगिकता है"।

दरबारी वातावरण एवं विलासितापूर्ण जीवन ने इन कवियों की दृष्टि को इतना संकुचित बना दिया था कि वे जीवन और जगत की व्यापकता पर दृष्टिपात भी न कर सके। भक्तिकालीन काव्य जहाँ महान संदेश का वाहक है, वहीं रीतिकालीन काव्य से ऐसा कोई संदेश प्राप्त नहीं होता। गंभीर चिंतन एवं व्यापक जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति का कोई प्रयास रीतिकालीन कवियों

P.T.O

ने नहीं किया । उनकी आधार भूमि इतनी संकुचित है कि जीवन की अनेकरूपता के लिए वहाँ स्थान ही नहीं है ।

(10) मुक्तक काव्य की रचना :- रीतिकाल में यद्यपि कुछ प्रबंध काव्य भी लिखे गये हैं, तथापि रीतिकवियों ने मुक्तक काव्य की रचना की ओर ही अपनी रुचि प्रदर्शित की है । जब राजदरबारों में कवि - दंगलों का आयोजन किया जाता हो, जहाँ एक - दूसरे से बाजी मार लेने की प्रतिस्पर्द्धा चल रही हो, वहाँ काव्य - रचना की प्रवृत्ति पनप ही नहीं सकती । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत है, "यदि प्रबंध काव्य विस्तृत वनस्थली है, तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता । इसी से वह सभा-समाजों के लिए अधिक उपयुक्त होता है ।" आलंकारिकता, चमत्कारप्रियता एवं बहुज्ञता का प्रदर्शन करने हेतु भी मुक्तक रचना की प्रवृत्ति का विकास रीतिकाल में हुआ । तत्कालीन दरबारी वातावरण के लिए मुक्तक रचनाएँ ही अधिक उपयुक्त थी, क्योंकि राजा - महाराजाओं के पास इतना अवकाश कहाँ था कि वे प्रबंध काव्य को सुनकर उनकी सराहना करते । कविगण तो एक ही दोहे या छंद में अपनी काव्य प्रतिभा का पूर्ण उत्कर्ष दिखाकर राजा - महाराजाओं को चमत्कृत करने में विश्वास करते थे । बिहारी जैसे - रससिद्ध कवियों ने दोहे जैसे छोटे छंद में ही रस की अपूर्व सृष्टि की है ।

(11) **ब्रजभाषा का प्रयोग** :- भक्तिकाल में जो ब्रजभाषा कृष्णकाव्य तक सीमित रही, वह रीतिकाल में आकर पूर्णतः काव्य-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो गयी और लगभग दो सौ वर्षों तक हिन्दी काव्य जगत पर एक छत्र शासन करती रही। रीतिकाल में केवल ब्रजक्षेत्र के कवियों ने ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण हिन्दी क्षेत्र के कवियों ने ब्रजभाषा में ही काव्य रचना की। मराठी क्षेत्र में भूषण ने, पंजाब में गुरु गोविंद सिंह ने, बुंदेली क्षेत्र (ओरछा) में केशव ने तथा राजस्थानी क्षेत्र (आमेर) में बिहारी ने ब्रजभाषा में ही अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की। निष्कर्ष यह कि रीतिकाल तक आते-आते ब्रजभाषा व्यापक काव्य-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो गयी थी। रीतिकालीन ब्रजभाषा अपने शब्द सौष्ठव, आनुप्रासिकता, मधुरता एवं पदलालित्य के कारण काव्य-भाषा के लिए पूर्ण उपयुक्त बन चुकी थी, किन्तु उसमें कवियों ने मनमानी तोड़-मरोड़ भी की। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रीतिकालीन ब्रजभाषा के इस दोष की ओर संकेत करते हुए हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिखा है — "रीतिकाल में एक बड़े अभाव की पूर्ति हो जानी चाहिए थी, पर वह नहीं हुई। भाषा जिस समय सैकड़ों कवियों द्वारा परिमार्जित होकर प्रौढ़ता को पहुँची, उसी समय व्याकरण द्वारा उसकी व्यवस्था होनी चाहिए थी। --- यदि शब्दों के रूप स्थिर हो जाते और शुद्ध रूपों के प्रयोग पर जोर दिया जाता तो शब्दों को तोड़-मरोड़ कर विकृत करने

P.T.O

का साहस कवियों को न होता, पर इस प्रकार की कोई व्यवस्था नहीं हुई - जिससे भाषा में बहुत-कुछ गड़बड़ी बनी रही"।

रीतिकालीन कवियों ने ब्रजभाषा में अवधी शब्दों एवं रूपों का इच्छानुसार प्रयोग किया है। बिहारी की भाषा में कीन, दीन जैसे क्रिया रूप इसी प्रवृत्ति के परिचायक हैं। इस काल की ब्रजभाषा में फारसी शब्दों का प्रयोग भी बढ़ चला था। रीतिकालीन ब्रजभाषा में फारसी शब्दों के प्रयोगाधिक्य पर टिप्पणी करते हुए शुक्ल जी लिखते हैं — "राजा-महाराजाओं के दरबार में विदेशी शिष्टता और सभ्यता के व्यवहार का अनुकरण कर फारसी के लच्छेदार शब्द वहाँ चारों ओर सुनाई देने लगे। अतः कवि लोग आयुष्मान और जय-जयकार हीं तक अपने को सीमित कैसे रख सकते थे? वे भी दरबार में 'उमरदराज महाराज तेरी चाहिए' पुकारने लगे"।

रीतिमुक्त कवियों की भाषा में लाक्षणिकता का सौंदर्य भी विद्यमान है। लक्षणा और व्यंजना का सहारा लेते हुए घनानंद जैसे कवि ने काव्य-भाषा की शक्ति का परिचय दिया। आचार्य शुक्ल ने घनानंद की काव्य भाषा की प्रशंसा करते हुए लिखा है — "घनानंद जी उन विरले कवियों में हैं, जो भाषा की व्यंजकता बढ़ाते हैं। अपनी भावनाओं के अनूठे रूप-रंग की व्यंजना के लिए भाषा का ऐसा बेधड़क प्रयोग करने वाला हिन्दी के पुराने कवियों

में दूसरा नहीं हुआ। भाषा के लक्षक और व्यंजक बल की सीमा कहाँ तक है, इसकी पूरी परख इन्हीं को थी"।

निष्कर्ष यह कि रीतिकालीन ब्रजभाषा में एक ओर तो माधुर्य एवं नाद सौंदर्य विद्यमान है तो दूसरी ओर उसमें आनुप्रासिकता एवं लाक्षणिकता होने से उसका सौन्दर्य द्विगुणित हो गया है। इन कवियों की भाषा-सामर्थ्य भी अपूर्व ही कही जा सकती है।

रीतिकालीन कवियों ने कवित्त, सवैया, दोहे अधिक लिखे हैं जो उनके वर्ण्य-विषय के लिए पूर्णतः उपयुक्त छंद थे। इन कवियों ने ~~कवित्त~~ एक ओर तो लक्षण-ग्रंथ लिखकर हिन्दी काव्य-रसिकों को काव्यशास्त्र से परिचित कराया तो दूसरी ओर श्रृंगार-प्रधान रचनाएँ लिखकर काव्य में माधुर्य का समावेश किया। बिहारी सतसई रीतिकाल की सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जा सकती है, जो अपनी काव्यकला, भाषा-सामर्थ्य एवं आलंकारिता के कारण एक अद्वितीय कृति बन पड़ी है। बिहारी, देव, सेनापति, घनानंद, केशव, भिखारीदास, पद्माकर जैसे सशक्त कवियों की रचनाओं से सम्पन्न रीतिकाल निश्चित रूप से हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण काल है।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

प्रश्न-1. रीतिकाल की सामान्य विशेषताओं पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

P.T.O

प्रश्न - 2. "रीतिकाल की कविता तत्कालीन परिस्थितियों की उपज है"। इस कथन की सम्यक समीक्षा कीजिए।

प्रश्न - 3. रीतिकालीन परिस्थितियों का तत्कालीन काव्य - प्रवृत्तियों से सामंजस्य स्थापित कीजिए।

प्रश्न - 4. "रीतिकाल की कविताओं में उपलब्ध अतिशय शृंगारिकता तत्कालीन समाज में व्याप्त विलासी प्रवृत्ति का प्रतिबिम्ब है"। इस कथन की सम्यक् समीक्षा कीजिए।

प्रश्न - (5) रीतिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न - 6. "बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि हैं।" इस कथन के आधार पर रीतिकालीन प्रवृत्तियों की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न - 7. बिहारी की काव्यगत ~~बि~~ विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

धन्यवाद —
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग - हिन्दी (S.R.A.P.C)
मोबाइल - 7909046087
दिनांक - 22/01/2022